**موضوع الخطبة** :الحث على الإكثار من قراءة القرآن في رمضان

**الخطيب** : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

**لغة الترجمة** : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمى(@Ghiras_4T)

# शीर्षक:

# रमज़ान में अधिक कुरान पढ़ने पर प्रोत्साहित करना

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شـرور أنفسـنا ومن سـيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ)

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا)

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا)

**प्रशंसाओं के पश्चात!**

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!में तुम्हें और स्वयं को अल्लाह के तक़वा(**ईश्वर भक्ति**)की वसीयत करता हूं,और आखिरत की ओर यात्रा करने वालों के लिए यह सर्वोत्तम भेंट है,अल्लाह का कथन है:

(وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَى)

अर्थात:अपने साथ यात्रा का सामान ले लिया करो, सर्वोत्तम भेंट अल्लाह का डर है।

यह वह वसीयत है जो अल्लाह ने पूर्व एवं पश्चात के समस्त लोगों को की है:

(وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ اتَّقُوا اللَّهَ)

अर्थात: निसंदेह हमने उन लोगों को जो तुम से पूर्व पुस्तक दिए गए थे और तुमको भी यही आदेश दिया है कि अल्लाह से डरते रहो।

जो लोग अल्लाह का तक़वा(धर्मनिष्ठा )अपनाते हैं,उनके लिए अल्लाह ने स्वर्ग तैयार कर रखा है:

(وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ)

अर्थात:कितना ही उत्तम ईश्वर भक्तों का घर है।

ए अल्लाह के बंदो!रमज़ान कुरान का महीना है,अल्लाह ने इस महीने में कुरान को बैतूलइज्ज़त से सांसारिक आकाश की ओर नाज़िल फरमाया,फिर घटनाओं के अनूसार नबी सल्ललाहु अलैहि वसल्लम पर धीरे धीरे उतारा,बल्कि अल्लाह तआला ने कुरान के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों को भी रमज़ान ही में नाज़िल किया,वासिला बिन असका रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है, नबी सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ग्रंथ रमजा़न की प्रथम रात को ,तौरात छठे रात को,इनजील रमज़ान के तेरह दिन गुजरने के पश्चात(अर्थात चौधवीं तारीख) को और कुरान चौबीस दिन गुजरने के पश्चात (अर्थात पचीस) रमज़ान को नाज़िल हूआ।(इसे अह्मद(4/107) ने रिवायत किया है और अल्बानी ने"अलसह़ीहा"(1575) में इसे ह़सन कहा है।}

- ए मोमिनो!कुरान का सस्वर पाठ रमज़ान में की जाने वाली महत्वपूर्ण प्रार्थना है,क्योंकि रमज़ान ऐसा महीना है जिस में कुरान को अधिक पढ़ना मुस्तह़ब(वांछनीय)कार्य है,धार्मिक पूर्वजों का परंपरा एवं प्रथा था कि वे रमजा़न में कई बार कुरान खत्म किया करते थे,कोई तीन रातों में कुरान समाप्त करलेता,तो कोई चार दिनों में खत्म करता और कोई चार से अधिक दिनों में कुरान खत्म करलेता।

ए अल्लाह के बंदो!कुरान का सस्वर पाठ सबसे श्रेष्ठ प्रार्थना और अल्लाह की निकटता प्राप्ति का सबसे बड़ा माध्यम है,चाहे तहज्जुद एवं तरावीह़ में सस्वर पाठ की जाऐ अथवा नमाज़ के बाहर सस्वर पाठ की जाऐ,अब्दुल्लाह बिन **मसऊद** रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:जिसने अल्लाह की पुस्तक का एक शब्द पढ़ा उसे

उसके बदले एक पुण्य मिलेगा,और एक पुण्य दस गुना बढ़ा दिया जाएगा,में यह नहीं कहता कि «الم»

एक शब्द है,बल्कि «الف»एक शब्द है, «لام»एक शब्द है और«ميم»एक शब्द है {इसे तिरमीजी (2910) ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सही़ कहा है।}

- अबू मूसा अशअ़री रजीअल्लाहु अंहु ने उल्लेख किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःउस मोमिन का उदाहरण जो क़ुरान पढ़ता हो,संतरे जैसी है जिस का सुगंध भी मधुर है और स्वाद भी सुस्वादु है और उस मोमिन का उदाहरण जो क़ुरान नहीं पढ़ता,खजूर जैसा है जिस में कोई सुगंध नहीं होता किंतु स्वाद मधुर होता है और पाखण्डी का उदाहरण जो क़ुरान पढ़ता हो,रैहा़ना(पुष्प) जैसा है जिसका सुगंध तो अच्छा होता है किंतु स्वाद कड़वा होता है और जो मुनाफिक(पाखण्डी) क़ुरान भी नहीं पढ़ता उसका उदाहरण अंदराइन जैसा है जिसका सुगंध नहीं होता और स्वाद भी कड़वा होता है {इसे बोखारी (5427) और मुस्लिम (797) ने वर्णन किया है।}
- अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःरशक(ईर्ष्या द्वेष) तो केवल दो ही व्यक्तिों पर होना चाहिएःएक उस व्यक्ति पर जिसे अल्लाह तआ़ला ने क़ुरान का ज्ञान दिया और वह रात-दिन उसकी सस्वर पाठ करता रहता है,उसका पड़ोसी सुन कर कह उठे कि काश मुझे भी इसके जैसा क़ुरान का ज्ञान होता और में भी इसके जैसा कार्य करता और वह दूसरा जिसे अल्लाह ने धन दिया और उसे सत्य के लिऐ लुटा रहा है।(उसको देख कर)दूसरा व्यक्ति कह उठता है कि काश मेरे पास भी इसके जैसा धन होता और में भी उसके जैसा खर्च करता {इसे बोखारी(5026) ने वर्णित किया है।}
- आयशा रजीअल्लाहु अंहा वर्णन करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःउस व्यक्ति का उदाहरण जो क़ुरान पढ़ता है और वह उसका हा़फिज भी है,सम्मानित एवं लिखने वाले नेक देवदूतों जैसा है और जो व्यक्ति क़ुरान बारबार पढ़ता है।फिर भी वह उसके लिऐ कठिन है तो उसे दोगुना पुण्य मिलेगा {इसे बोखारी (4937) और मुस्लिम (798) ने वर्णित किया है उपरोक्त शब्द बोखारी के हैं।}

अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"क्या तुम में से कोई इस बात को पसंद करता है कि जब वे अपने घर लौट कर जाए तो उसे तीन बड़ी मोटी गर्भवती ऊंटनियां घर पर बंधी हुई मिलीं"?हमने कहाःजी हां(क्यों नहीं) ।आपने

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"तुम में से जब कोई व्यक्ति नमाज़ में तीन आयतें पढ़ता है,तो यह उसके लिए तीन बड़ी मोटी गर्भवती **ऊंटनियों** से श्रेष्ठतर हैं" {मुस्लिम 208}
उक़बा बिन आ़मिर रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर से निकल कर बाहर आऐ।हम सफा(चबूतरे) पर थे,आपने फरमायाः"तुम में से कौन पसंद करता है कि रौजाना सुबह बत़ह़ान {मदीना की वादी है}अथवा अ़क़ीक़ {मदीना की एक वादी है} (की वादी) में जाए और वहां से बेगैर किसी पाप एवं संबंध तौड़ने के दो बड़े बड़े कोहानों वाली **ऊंटनियां** लाए? "हमने कहाःए अल्लाह के रसूल!हम सब को यह बात पसंद है,आपने फरमायाः"फिर तुम में से सुबह कोइ व्यक्ति मस्जिद में क्यों नहीं जाता कि वह अल्लाह की पुस्तक की दो आयतें सीखे अथवा उनकी सस्वर पाठ करे तो यह उसके लिऐ दो **ऊंटनियों** की प्राप्ति से अच्छा है और यह तीन आयतें तीन **ऊंटनियों** से अच्छा है और चार आयतें उसके लिए चार **ऊंटनियों** से बेहतर हैं और (आयतों की संख्या जो भी हो ) **ऊंटनियों** की उतनी संख्या से बेहतर है"। {मुस्लिम 803}

- अबू अमामा बाहिली रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि में ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुनाः"कुरान पढ़ा करो,क्योंकि वह क़यामत के दिन कुरान वालों (ह़िफज़ व पाठन व अ़मल करने वालों) का सिफारशी बन कर आऐगा" {मुस्लिम 804}
- यह वे चंद ह़दीसें हैं जो रमज़ान में कुरान की तिलावत(सस्वर पाठ) के लिए प्रोतसाहित करने से संबंधित हैं,अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से लाभ पहुंचाए,मुझे और आपको इसकी आयतों और नितीयों पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुंचाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से क्षमा प्राप्त करता हूं आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें निसंदेह वह अति माफ करने वाला अति कृपा करने करने वाला है।

**द्वितीय उपदेशः**

**الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:**

आप जान लें-अल्लाह आप पर कृपा करे-कि मोमिन बंदा जब रोज़ा के साथ कुरान की तिलावत(सस्वर पाठ)करे तो वह इस का अधिक पात्र होता है कि क़यामत के दिन यह आ़माल उसके प्रति अनुशंसा करें कि उसके स्थान उच्च कर दिऐ जाऐं और पाप मिटा दिऐ

जाऐं।अब्दुल्लाह बिन अ़मर रजीअल्लाहु अंहु रिवायत करतें हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"रोज़ा और कुरान क़यामत के दिन बंदे के प्रति अनुशंसा करेंगे,रोज़ा कहेगा:(हे पालनहार!मेंने इसे खाने पीने और आतमा की इच्छाओं से रोके रखा,इस़के प्रति मेरी अनुशंसा स्वीकार करले)और कुरान कहेगा:(मेंने इसे रात को सोने से रोके रखा,इसके प्रति मेरी अनुशंसा स्वीकार करले)इस प्रकार दोनों की अनुशंसा स्वीकार कर ली जाएगी।11{इसे अह़मद (2/174) ने रिवायत किया है और अल्बानी ने "सही़ अलतरग़ीब"(984) और "सही़ अलजामे"(7329) में उसे सही़ कहा है।}

अल्लाह के बंदो!अल्लाह के लिए अधिक से अधिक पुण्य के कार्य करो,आधा महीना गुजर चूका है,मोमिन पर अल्लाह का यह कृपा है कि वह रमज़ान के महीने में एक साथ दो जिहाद करे,दिन में रोज़े रखे और रात में क़ियाम करके जिहाद करे,जिसने इन दोनों जिहाद को एक साथ किया उन (में आने वाली कठीनाइयों पर )धैर्य से काम लिया तो वह अल्लाह के इस कथन में शामिल होने का अधिक पात्र है:

(إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ)

अर्थात:धैर्य रखने वालों ही को उनका पूरा पूरा अनगिनत बदला दिया जाता है।

आप यह भी जानलें-अल्लाह आप पर अपनी कृपा नाज़िल करे-कि अल्लाह तआ़ला ने आपको ऐक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थात:अल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:"तुम्हारे सबसे अचछे दिनों में से शुक्रवार का दिन है,उसी दिन मनु पैदा किये गऐ,उसी दिन उनकी आत्मा निकाली गई,उसी दिन सूर फूंका जाएगा, {अर्थात सूर में दूसरी बार फूंक मारा जाएगा,इस्का मतलब वह सूर है जिसमें इसराफील फूंक मारेंगे,यह वह देवदूत हैं जिनको सूर में फूंक मारने पर नियुक्त किया गया है,जिसके पश्चात समस्त मुर्दो अपनी कबरों से उठ खड़े होंगे।} उसी दिन चीख होगी। {अर्थात जिससे सांसारिक जीवन के अंत में लोग बेहोश होकर गिर पड़ेंगे और सब के सब मर जाऐंगे,यह बेहोशी उस समय **उत्पन्न** होगी जब सूर में बहली बार फूंक मारा जाऐगा,दो

फूंक के मध्य में चालीस साल का अंतर होगा।} इसलिऐ तुमलोग उस दिन मुझ पर अधिक से अधिक दरूद भेजा करो,क्योंकि तुम्हारा दरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है"।{इसे नेसाई (1373),अबूदाऊद (1047),इब्ने माजा (1085) और अह़मद (4/8) ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सही अबूदाऊद में और मुस्नद के शोधकर्ताओं ने ह़दीस:(16162) के अंतर्गत इसे सह़ी कहा है।} ए अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़यामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

- हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा,हे अल्लाह! हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे, उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना।हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक लागू और पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर चलने की तौफीक़ प्रदान कर।
- हे अल्लाह हमसे इस महामारी को दूर करदे,निसंदेह हम मुसलमान हैं,हे अल्लाह! हमसे इस महामारी को दूर करदे,निसंदेह हम मुसलमान हैं, हे अल्लाह! हमसे इस महामारी को दूर करदे,निसंदेह हम मुसलमान हैं,हे अल्लाह!समस्त संसार के मुसलमान इस महामारी से पीड़ित हैं,हे दोनों संसार के पालनहार!उनसे इस आपदा को दूर करदे।हे अल्लाह!प्रत्यिेक कठिनाई पाप के कारण ही आती है,और तौबा से ही दूर होती है,हम तौबा के साथ अपने हाथ तेरे दरबार में उठाए हुए हैं और अपने माथे को तेरे चौकठ पे झुकाए हूए हैं(हमारी तौबा स्वीर करले)
- हे अल्लाह!हमें रमज़ान में पुण्य के कार्य करने की तौफीक़ प्रदान कर।
- हे अल्लाह हमारे आखेरत को सुधार दे जो हमारे (दीन व दुनिया के )प्रत्येक कार्य की रक्षा का माध्यम है और मेरी दुनिया को संवार दे जिसमें मेरा गुजारा है और मेरी आखेरत को संवार दे जिसमें मेरा(अपनी मंज़िल की ओर) लौटना है और मेरे जीवन को मेरे लिऐ प्रत्येक अच्छाई में वृद्धि का कारण बनादे और मेरी मृत्यु को मेरे लिए प्रत्येक बूराई से दूर करदे।
- हे अल्लाह!हम तेरा शरण चाहते हैं तेरे आशीर्वादों के छिन जाने से,तेरे कृपा के हट जाने से,तेरे अचानक की यातना से और तेरी प्रत्येक प्रकार की नाराजगी से।

हे हमारे प्रवर्दिगार!हमें क्षमा प्रदार कर और हमारे उन भाइयों को भी जो हमसे पश्चात ईमान लाचुके हैं और ईमानदारों की ओर से हमारे **हृदय** में कीना-कपट (और शत्रुता) न डाल।हे हमारे रब!निसंदेह तू अनूराग एवं कृपा करने वाला है।

- हे अल्लाह हम तुझ से स्वर्ग और उससे निकट करने वाले कथन व कार्य मांगते हैं,और तेरा शरण चाहते हैं नरक और उसके निकट लेजाने वाले कथन व कार्य से।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखेरत में भलाई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।


**लेखकः**

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

१८ रमज़ान १४४२ हिजरी

जूबैल, **सऊदी** अ़रब

००९६६५०५९०६७६१

**अनुवादः**

फैजुर रह़मान हिफजुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com